“मन्नू भंडारी की कहानियों में से प्रमुख स्त्री पात्रों की विशेषताओं की एक झलक”

जूली कुमारी

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय

मुजफ्फरपुर।

हिन्दी कहानी जगत में कहानी लिखने वाली महिलाओं में मन्नू भंडारी का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। मन्नू जी अपने समय की प्रसिद्ध कहानी लेखिकाओं में से एक है। इनकी कहानियाँ पुरुष की आकांक्षाओं से प्रेरित होकर स्त्री का तस्वीर नहीं दर्शाती बल्कि स्त्री की दृष्टि से चित्रण प्रस्तुत करती है। मन्नू भंडारी की कहानियों में प्रमुख स्त्री पात्र की प्रमुख विशेषता, अनुभवों की सच्चाई को दर्शाने का प्रयास किया जा रहा है। सबसे पहले ‘मैं हार गई’ (कहानी संग्रह) 1957 में प्रकाशित कहानी संग्रह है। इसमें से ‘‘दो कलाकार’’, ‘‘एक कमजोर लड़की की कहानी’’, ‘‘सयानी बुआ’’, “दीवार बच्चे और बरसात”, के प्रमुख स्त्री पात्रों की विशेषताएँ पर दृष्टि डालने का प्रयास कर रही हूँ।

इसके बाद ‘‘तीन निगाहों की एक तस्वीर (कहानी संग्रह) 1959 में प्रकाशित कहानी संग्रह इसमें से ‘‘मजबूरी’’, और “घुटन” कहानी के प्रमुख पात्रों की विशेषताओं को दर्शा रही हूँ। मन्नू भंडारी की चर्चित कहानी ‘‘दो कलाकार’’ की प्रमुख स्त्री पात्र हैं अरूणा। अरूणा के चरित्र की विशेषता कुछ इस प्रकार है–

- अरूणा एक समाजसेवी है।
- बी0ए0 की पढ़ाई हेतु हॉस्टल में रहती है।
- अरूणा गरीब परिवार की है।
- परोपकारी एवं संवेदनशील लड़की है।

- जमादार, दाईयों, चपरासियों के बच्चों को पढ़ाया करती है।
- बाढ़ से समय भी पीड़ित को चंदा इकट्ठा करने में मदद करती है।
- दो अनाथ बच्चों को गोद लेती है तथा उसका पालन–पोषण करती है।
- बीमार तथा लाचार लोगों की मदद करती है।

स्त्री विमर्श की दृष्टि से अरूणा का विशेष महत्व है। स्त्री स्वभाव से संवेदनशील और परोपकार की भावना रखनेवाली होती है। मन्नु भंडारी ने अपनी कहानी "दो कलाकार" में अरूणा के चरित्र का निर्माण कुछ ऐसा ही किया है। इस प्रकार इस पात्र के निर्माण में मन्नू भंडारी की रचना दृष्टि के साथ स्त्री जीवन के यथार्थ के चित्रण का बोध होता है। मन्नू भंडारी की 'दो कलाकार' कहानी की प्रमुख स्त्री अरूणा के इस संवाद को देखा जा सकता है जिसमें स्त्री जीवन के यथार्थ का चित्रण हुआ है – "वह बच्चा नहीं बचा चित्रा। किसी तरह उसे नहीं बचा सके। और उसका स्वर किसी गहरे दुःख में डूब गया।"[1]

'एक कमजोर लड़की की कहानी' मन्नू भंडारी की कहानी में से एक है। इस कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र रूपा है। रूपा के चरित्र की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार है –

- सामाजिक तिरस्कार से बचकर रहने वाली युवती।
- पिता एवं पति की बातों को मानने वाली स्त्री।
- संस्कारों के बंधन में बंध कर रहने वाली स्त्री।
- लोक लाज के कारण अपनी इच्छाओं को तिलांजलि देने वाली लड़की।
- उचित निर्णय नहीं लेने के कारण प्रेमी को नकारने वाली स्त्री।
- अपने विचारों को न मानकर दूसरे के विचारों को मानने वाली स्त्री।

स्त्री विमर्श की दृष्टि से रूप का विशेष महत्व है। मन्नू भंडारी ने अपनी कहानी 'एक कमजोर लड़की की कहानी' के प्रमुख पात्र के रूप का चयन बहुत सोच विचार कर किया है। स्त्री जीवन में ऐसे सौकड़ों–हजारों उदाहरण बिखरे पड़े हैं जहाँ लोक लाज और

परम्परागत रीति–रिवाज का पालन करने में महिलाएँ एवं स्त्रियाँ अपने जज्वातों को दबा लेती हैं। शिक्षा और अशिक्षा के बीच झूलती महिलाएँ, पुरुष प्रधान समाज में कुछ ऐसे ही अपने प्रेम का गला घोंट देती है; कोई जानता तक नहीं है।

मन्नु भंडारी की ही अन्य कहानियों में ऐसे स्त्री पात्र का चयन किया गया है जो अपने प्रेम को पाने के लिए सामाजिक बंधनों का जबरदस्त विरोध करती है। इस तरह की कहानियों में लेखिका की चर्चित कहानी 'घूटन' है। एक कमजोर लड़की की कहानी की इन पंक्तियों में लेखिका की स्त्री दृष्टिकोण देखा जा सकता है :– "कौन, रूप बेटी! अरे वह बड़ी समझदार लड़की है। मेरा कहना वह कभी टाल सकती है भला! आज के जमाने में ऐसी लड़की बड़े भाग्य से मिलती है।"[2]

मन्नु भंडारी की 'सयानी बुआ' कहानी की मुख्य पात्र एक अधेर स्त्री है जिसका नाम सयानी है। सयानी बुआ के चरित्रा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है :–

- सयानी बुआ समय की पाबंद है।
- सयानी बुआ अनुशासन प्रिय है।
- दूसरों पर अपनी बिचार थोपने वाली स्त्री है।
- दूसरों पर अपनी रोब जताने वाली स्त्री है।
- इनहें तोड़–फोड़ से सख्त नफरत है।
- इनकी भयंकर कठोरता में ही कोमलता भी छिपी है।

मन्नू भंडारी की 'सयानी बुआ' कहानी की नायिका का चयन बहुत सोच विचार कर आज के युग के अनुसार किया गया है। सयानी बुआ के दो रूप हैं:– उपर से देखने पर कठोर मालूम पड़ता है लेकिन उनको समझने लगते हैं तो लगता है कि उनके अंदर भी कोमला छिपी है पर दिखाई कभी–कभी ही देती है। मन्नू भंडारी की 'सयानी बुआ' अनुशासित होने के साथ–साथ भावुक भी हैं। ये स्त्रियाँ अपने मन की बात घर–परिवार में चलाना चाहती

हैं। यदि इनकी बात कोई नहीं सुनता है तो इन्हें क्रोध भी बहुत जल्दी आ जाता है। ये स्त्रियाँ बहुत ही ईमानदार एवं समय की पाबंद होती हैं। ऐसा ही मन्नू भंडारी के कहानी 'सयानी बुआ' के सयानी के चरित्रा में देखा जा सकता है जो इस प्रकार है:–

"ठीक पाँच बजे सब लोग उठ जाते; फिर एक घंटा मैदान में बाहर टहलना होता, उसके बाद चाय–दूध होता, उसके बाद अन्नू को पढ़ने के लिए बैठना होता। भाई साहब भी तक अखबार और ऑफिस की फाईलें देख करते। नौ बजते ही नहाना शुरू होता। जो कपड़े बुआ जी निकाल दें वही पहनने होते। फिर कायदे से आकर मेज पर बैठ जाओ और खाकर काम पर जाओ।" [3]

'मजबूरी' कहानी की कहानीकार मन्नू भंडारी है। इस कहानी में एक वृद्ध महिला पूज्य पात्रा अम्मा हैं। अम्मा की चरित्र की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार है –

- अम्मा अपने बेटे रामेश्वर से ज्यादा प्यार बहू से करती है।
- अम्मा ममतामयी एवं उदारमयी माँ एवं सास है।
- अम्मा गठिया के दर्द से पीड़ित है।
- बेटे एवं बहू के आने की खुशी में इतने कड़क ठंढ़ में आँगन निप रही है।
- अम्मा की ऐसे यादास्त बहुत कमजोर थी परंतु बहू के सारे काम समय पर किया करती है।

मन्नू भंडारी की 'मजबूरी' कहानी की अम्मा का चयन इस कहानी को ध्यान में रखकर किया गया है। मन्नू जी को जैसी पात्र की आवश्यकता थी वैसी ही अम्मा का चरित्र है। हर माँ अपने बच्चों से बेहद प्यार करती है चाहे वह स्वयं तकलीफ में क्यों न हो। अपने बच्चों को हर सुख–सुविधा देना चाहती है। वैसी ही हमारी अम्मा है जो स्वयं गठिया के दर्द से कराह रही है लेकिन बेटा और बहू के आने की खुशी में इतनी कड़क ठंढ़ में आंगन निप

रही है। स्त्री अपने बेटे से ज्यादा पोतों को बहुत प्यार करती है। मन्नू भंडारी की 'मजबूरी' कहानी के अम्मा का चरित्र निम्नांकित पंक्तियों में देखा जा सकता है :–

"बहुत जल्दी सीख लूँगी बहु। जरा सा हाथ काँप गया था, फिर शीशी का मुँह भी तो कितना छोटा है।"[4]

मन्नू भंडारी की 'दीवार, बच्चे और बरसात' कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र शिक्षित नारी है। शिक्षित नारी के चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार है –

- सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने वाली स्त्री।
- आत्म सम्मान के लिए अपने पति से अलग होने वाली स्त्री।
- स्वाभिमानी एवं आदर्श नारी।
- गाँव की अशिक्षित नारी के द्वारा शिक्षित नारी को गलत मानने का विरोध करने वाली नारी है।
- अपने दोस्तों के साथ बाहर घूमने वाली स्त्री है।
- आधुनिक युग के विचार के साथ जीवन यापन करती है।

मन्नू भंडारी की 'दीवार, बच्चे और बरसात' कहानी की नायिका का चयन बहुत सोच–विचार कर किया गया है। शिक्षित नारी के जीवन में जो कुछ होता है उसक चित्रण इसके चरित्र में देखने को मिलता है। एक शिक्षित नारी कभी भी दूसरों के इशारे पर नहीं चलती है एवं स्वयं निर्णय लेने की क्षमता रखती है तथा अपने स्वाभिमान का भी खयाल रखती है तथा दूसरों को कष्ट भी नहीं देती है। लेकिन अशिक्षित स्त्रियों के द्वारा शिक्षित नारी को नीच दृष्टि से देखा जाता है एवं भला–बुरा कहा जाता है। एक शिक्षित नारी अपने आत्म–सम्मान से कभी समझौता नहीं कर सकती है तथा अपने आत्म–सम्मान एवं परिवार में कलह न हो इसलिए अपने पति को भी छोड़ सकती है। मन्नू भंडारी के 'दीवार, बच्चे और बरसात' कहानी में शिक्षित नारी के चरित्र को निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है :–

"होला—पाई कुछ नहीं ले गई, बड़े ठसके से गई है। हाथ—गले का जेवर तक उतार गई और कह गई कि मैं किसी की दबैल होकर नहीं रह सकूँ। खुद कमाकर जी लूँगी।" [5]

'घूटन' मन्नू भंडारी की लोकप्रिय कहानी है। इसकी पात्र मोना है। मोना के चरित्र की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार है :—

- मोना की माँ हमेशा बीमार रहती है तथा छोटे भाई—बहन भी है।
- मोना अपने विधवा माँ की बड़ी लड़की है।
- मोना अपने घर परिवार को चलाने वाली एवं कमाने वाली युवती है।
- मोना तथा प्रतिभा दोनों पड़ोसी हैं।
- मोना अरूप से प्रेम करती है तथा विवाह के लिए तड़प रही है।
- अपने प्रेमी के साथ भाग जाना चाहती है। लेकिन भाग नहीं पाती।
- मोना घूटन महसूस करती है।

मन्नू भंडारी की दृष्टि से मोना के चरित्र का बड़ा ही महत्व है। एक शिक्षित युवती अपने जीवन का निर्णय स्वयं ले सकती है तथा उसे निभा भी सकती है। मोना शिक्षित होने के साथ—साथ नौकरी कर अपने परिवार को चलाती है तथा अपने प्रेमी से शादी करने का निर्णय भी लेती है। हम अक्सर देखते हैं कि माँ—पिता अपने खुशी के लिए अपने बच्चों का इस्तेमाल करते हैं वैसे ही माता—पिता ऐसा करते हैं जो अशिक्षित या मजबूर होते हैं।

मन्नू भंडारी के 'घूटन' में मोना के चरित्र को निम्न पंक्तियों में देख सकते हैं:—

"मोना के ऊपर माँ का व्यक्तित्व कुछ इस प्रकार हावी हो चुका है कि वह चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती। घर की समस्या, भाई—बहनों की समस्या के आगे उसका अपना व्यक्तित्व सौ—सौ बार हार चुका है। वह रात—रात रोती है, दिन—दिन घुलती और

घुटती है पर इसके आगे कुछ नहीं। जब अरूप आता है तो वीराने में हरियाली अवश्य छा जाती है पर बड़ी क्षणिक होती है वह।" [6]

संदर्भ–सूची

1. 'दो कलाकार' सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ0सं0–62
2. 'एक कमजोर लड़की की कहानी', उपर्युक्त, पृ0सं0–69
3. 'सयानी बुआ', उपर्युक्त, पृ0सं0–50–51
4. 'मजबूरी', उपर्युक्त, पृ0सं0–229
5. 'दीवार, बच्चे और बरसात', पृ0सं0–84
6. 'घूटन', पृ0सं0–152